5

''परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया''

(1:24-28क)

किसी अवसर पर मुझ से किसी ने कहा है, ''मेरे पास अच्छी खबर और बुरी खबर है। आपको पहले कौन सी चाहिए?''[1] पौलुस के पास अपने पाठकों के लिए ''अच्छी खबर'' और ''बुरी खबर'' दोनों थीं। अच्छी खबर यह कि वे विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पा सकते थे। परन्तु पहले उसने बुरी खबर बताई कि बिना परमेश्वर के वे पाप में छुटकारे की आशा के बिना नीचे से नीचे होते जा रहे थे। यह सच्चाई इतनी महत्वपूर्ण है कि इसे स्थापित करने के लिए उसने दो से अधिक अध्याय दिए (1:18-3:20)।

पौलुस ने केवल इतना कहकर कि ''हम सब पापी हैं'' अच्छी खबर क्यों नहीं बताई? क्योंकि अधिकतर लोगों को पता ही नहीं है कि वे पापी हैं।

> अधिकतर को लगता है कि कुल मिलाकर कुछ अच्छे लोग हैं। हो सकता है कि वे सिद्ध न हों पर उन्होंने कोई बड़ी गलती नहीं की है। उन्होंने किसी की हत्या नहीं की या कोई बैंक नहीं लूटा है। उन्होंने अपने पति या पत्नी को धोखा नहीं दिया है या अपने बच्चों को मारा नहीं है। वे ईमानदार और मेहनती हैं और अच्छे पड़ोसी बनने की कोशिश करते हैं। क्योंकि वे किसी वास्तविक विनाशकारी पाप से अवगत नहीं हैं, इसलिए उन्हें लगता है कि वे परमेश्वर के साथ ही होंगे। उन्हें यह समझ नहीं आता कि उन्होंने *अपने ही* मानकों को देखा हो, पर *परमेश्वर* के मानक को नहीं।[2]

कल्पना करें कि कोई व्यक्ति सिरदर्द होने के कारण डॉक्टर के पास इस उम्मीद से जाता है कि उसे सिरदर्द की गोली मिलेगी। इसके बजाय डॉक्टर उसे बताता है कि तुरन्त ऑप्रेशन की आवश्यकता है। सदमे से बाहर निकलकर वह आदमी सम्भवतया इस बात पर ज़ोर देगा कि डॉक्टर उसे समझाए कि ऑप्रेशन *क्यों* आवश्यक है। पौलुस अपने पाठकों को यह समझाना चाहता था कि मनुष्य जाति का आत्मिक ''रोग'' इतना बढ़ गया था कि छोटा-मोटा ''उपदेश भरा'' उपचार (जैसे ''अच्छा जीवन बिताओ'' या ''अच्छे काम करो'')। बिना ''बड़े उपदेशक'' के (यीशु में प्रकट किया गया परमेश्वर का अनुग्रह) मनुष्यजाति नष्ट हो जाती।

अन्यजातियों को पाप से निरुत्तर करना था। पिछले पाठ में 1:18-25 में इस पर उसकी आरम्भिक टिप्पणियों की समीक्षा थी। पाठ में आयत 24 में वापस जाकर हम आयत 28 के पहले

भाग तक आएंगे।

दुखद ठुकराया जाना (1:24, 26, 28)

हमारे वचन पाठ में तीन बार मिलने वाला महत्वपूर्ण वाक्यांश है ''परमेश्वर ने छोड़ दिया'' (आयतें 24, 26, 28)। (KJV में आयतों 24 और 26 में ''God gave them up'' और आयत 28 में ''God gave them over'' है, परन्तु ''gave over'' और ''gave up'' के लिए यूनानी शब्द एक ही है: *paredoken*।) 1:18-32 को समझने के लिए हमें ''God gave them over'' के अर्थ समझने की आवश्यकता है।

निर्णायक कारण

जब भी यह वाक्यांश आता है तभी हमें ''परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया'' का *कारण* दिया जाता है। आयतें 22 और 23 में हमें बताया गया है कि लोग इतने मूर्ख बन गए थे कि उन्होंने ''अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों और, चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।'' फिर आयत 24 कहती है कि ''*इस कारण* परमेश्वर ने उन्हें ... छोड़ दिया।''

आयत 25 में पौलुस ने कहा कि अन्यजातियों ने ''परमेश्वर की सच्चाई को झूठ बना डाला और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की।'' फिर आयत 26 आरम्भ होती है ''*इसलिए* परमेश्वर ने उन्हें ... छोड़ दिया। ''

आयत 28क में पौलुस ने लिखा, ''*और जब* उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया।'' तीनों आयतों में जिस बात ने परमेश्वर को मनुष्यजाति को छोड़ने के लिए प्रेरित किया वह उसे परमेश्वर के रूप में मानने से ढीठता के कारण इनकार करना था, जिसका परिणाम मूर्तिपूजा हुआ।

ईश्वरीय उत्तर

पौलुस के यह कहने का क्या *अर्थ* था कि ''परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया।'' परमेश्वर ने ''उन्हें छोड़कर'' क्या किया? अनुवादित शब्द ''छोड़ दिया'' (*paradidomi* से *paredoken*) एक मिश्रित शब्द है, जो *didomi* (''देना''[3]) के साथ उपसर्ग *para* को मिलाता है। *Paradidomi* का अर्थ ''पकड़ाना, सौंपना'' है।[4] क्रूस की कहानी में इसका इस्तेमाल यीशु को मुकदमे के लिए पिलातुस को और मारे जाने के लिए सिपाहियों को सौंपे जाने के लिए किया गया है (मरकुस 15:1, 15)।

कई अनुवादों में रोमियों 1 में ''छोड़ दिया'' है, परन्तु कई लोगों के मन में ''छोड़ देना'' का अर्थ ''अब कोई दिलचस्पी न होना'' या ''कोई ध्यान न देना'' है। परमेश्वर जब पापियों को छोड़ देता है तब वह उसका ध्यान रखता है (2 परतस 3:9); उसे अभी भी आशा थी कि वे वापस आ जाएंगे। क्योंकि ऐसा ही है, इसलिए अधिकतर अनुवादों में *paredoken* के अर्थ को बताने वाले और शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। LB में ''परमेश्वर ने उन्हें जाने दिया'' (आयत 26) है।

तो फिर पौलुस का यह कहने का अर्थ क्या था, ''उन्हें पकड़वा दिया,'' या ''उन्हें सौंप

दिया'' या ''उन्हें जाने दिया''? पौलुस के वाक्यांश के इस्तेमाल पर अलग-अलग लेखाकारों की अलग-अलग राय है।[5] पर अधिकतर एक ही? या (मिलते-जुलते) निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। मनुष्य जाति को पाप की ओर नीचे को जाने वाले घुमावदार रास्ते से रोकने के बजाय परमेश्वर ने उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार जाने दिया (तुलना करें उत्पत्ति 6:3)। NLT में ''परमेश्वर ने उन्हें आगे जाकर अपनी मन मर्जी से लज्जित काम करने दिए'' (आयत 24)। इसके अलावा उनके कामों के परिणामों से लोगों की रक्षा करने के बजाय, परमेश्वर ने उन्हें अपनी पसन्दीदा जीवन शैलियों के लिए पूर्ण दण्ड पाने दिया (गलातियों 6:7)। डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने लिखा है:

> मनुष्यजाति के कार्य के उत्तर में परमेश्वर की प्रतिक्रिया उन्हें आग और गंधक में भेजना नहीं था। ... मूर्तियों की पूजा करने वालों के सिरों पर पहले की तरह आज नहीं। उसने कुछ ऐसा दिया जो कहीं अधिक सूक्ष्म, कहीं असीमित रूप से कहीं अधिक भयावह है। उसने मनुष्य को अपना मार्ग चुनने का पूरा अधिकार दिया और फिर परिणामों के साथ जीने की पूरी छूट दी।[6]

जे. डी. थॉमस ने कहा है, ''यदि आप परमेश्वर से अलग होने का निर्णय लेते हैं, तो वह आपको रोकने के लिए स्वर्गदूतों की सेना को नहीं भेजेगा। इसलिए उसका मन दुखी होगा, पर वह आपको जाने देगा।''[7] रिचर्ड रोजर्स ने इस प्रकार कहा है: ''जब आप अपने आपको किसी को सौंप देते हैं तो परमेश्वर आपको उस चीज़ के लिए छोड़ देगा।'' यह इसलिए नहीं है कि वह [क्रोधित] है चाहे वह हो सकता है। यह तो इसलिए है कि वह ''प्रेम करने वाला है, जो उसे होना चाहिए।''[8] तीन लेखकों के समूहों ने सुझाव दिया कि पौलुस अपने समय के लोगों से कह रहा था, ''आस-पास देखो! हर जगह सबूत हैं कि परमेश्वर अपने क्रोध में, पाप पूर्ण स्वभाव को अपने रास्ते पर भागने देता है। मनुष्य जाति संकट में है!''[9]

यूजीन पीटरसन ने रोमियों 1:24 के उपदेश को इस प्रकार व्यक्त किया: सो एक अर्थ में परमेश्वर ने कहा कि '' 'यदि तुम यही चाहते हो, तो तुम्हें यही मिलेगा थोड़ी देर के बाद ही वे सूअरों के बाड़े में रह रहे थे' '' (MSG)। पीटरसन का रूपक हमें उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत का स्मरण कराता है (लूका 15:11-32)। पिता की *इच्छा* नहीं थी कि छोटा पुत्र घर छोड़कर जाए। फिर भी उसने उसे जाने *दिया,* चाहे उसे मालूम था कि लड़का मुसीबत में फंसने जा रहा है। पौलुस की शब्दावली का इस्तेमाल करें तो पिता ने पुत्र की ''स्वार्थी'' इच्छाओं के लिए उसे छोड़ दिया और उसे उस मार्ग में जाने की अनुमति दी जो सूअरों के बाड़े में जाता था। इस सब के दौरान पिता को उम्मीद थी कि उसके पुत्र को होश आएगा और वह घर वापस आ जाएगा।

मनुष्यजाति को ''परमेश्वर द्वारा छोड़ा गया'' (जैसा कि AB में संकेत है) हो सकता है, पर लोगों को ''परमेश्वर द्वारा भुलाया'' नहीं गया था। बेशक पाप व्यक्ति को परमेश्वर से अलग करता है (यशायाह 59:1, 2), पर इस जीवन में परमेश्वर पापी को पूरी तरह से त्यागता नहीं है। पाप से भरा यह संसार यह समझता नहीं है कि यह परमेश्वर के अनुग्रह और करुणा के प्रतिदिन दिखाए जाने पर कितना निर्भर है (देखें मत्ती 5:45)। परन्तु यदि कोई मरने तक अपश्चात्तापी रहे, तो उसे अनन्तकाल तक ''परमेश्वर द्वारा त्यागा'' *जाएगा* (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। सी. एस. लूईस सही था जब उसने लिखा कि खोए हुए लोगों को ''वही सदा तक रहने वाली भयंकर

स्वतंत्रता दे दी, जो उन्होंने मांगी है।''[10]

परेशान करने वाला परिणाम (1:24, 25)

पौलुस ने दो उदाहरण दिए कि परमेश्वर द्वारा जो चाहे करने के लिए मनुष्यों को ''छोड़ देना'' कैसे हुआ। पाप की विशेष किस्म अनैतिकता का पहला उदाहरण है (आयतें 24-27)। दूसरा उदाहरण अधिक सामान्य है और उसे असमानता माना जा सकता है (आयतें 28-32)। इस पाठ के शेष भाग में पहले उदाहरण पर ध्यान दिया जाएगा।

24 से 27 आयतों की अपनी चर्चा आरम्भ करने से पहले मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि यह किसी प्रकार ठोकर देने या पेरशान करने की इच्छा से नहीं है। कुछ विषय इतने परेशान करने वाले होते हैं कि हम उनसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। तौभी पौलुस मनुष्य के वंचित होने की अपनी चर्चा में और सीधी बात करने वाला था। प्रचार करने और परमेश्वर की सच्चाई बताने को समर्पित यानी उसकी सारी सच्चाई बताने के लिए समर्पित होने के कारण (देखें प्रेरितों 20:20, 27)। मुझे इन सभी आयतों पर विचार करना आवश्यक है। मैं कठोर न होने का हर प्रयास करूंगा, पर मैं साफ-साफ बात करने की कोशिश करूंगा।

कामुक आचरण

रोमियों 1:22 और 23 में मूर्तियों की चर्चा करने के बाद पौलुस ने कहा ''इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें'' (आयत 24)। अनुवादित शब्द ''कामुक'' (*epithumia*) किसी भी प्रकार की तीव्र इच्छाओं का संकेत देता है। इसका अर्थ शुद्ध इच्छा हो सकता है (लूका 22:15)। पर आम तौर पर इससे बुरी इच्छाओं का ही संकेत मिलता है।[11] रोमियों 1:24 में पौलुस अशुद्धता के लिए तीव्र इच्छा की बात कर रहा था।

अनुवादित शब्द ''अशुद्धता'' (*akatharsia*) ''सफाई'' के लिए शब्द (*katharismos*) से पहले नकारात्मक (*a*) जोड़ा है, जिससे शब्द का अर्थ ''गंदगी'' हो जाए (देखें KJV)। यह ''गंदगी'' शारीरिक, औपचारिक या नैतिक हो सकती है।[12] 1:24 का संदर्भ संकेत देता है कि पौलुस के मन में विशेष प्रकार की नैतिक विधि थी। NIV में ''sexual impurity'' है।

जब लोग परमेश्वर से दूर हो जाते हैं तो वे नैतिक बंदिशें फैंक देते हैं। पतित समाज के लक्षणों में (1) शारीरिक सम्बन्धों की छूट और (2) ''शारीरिक तन्त्र'' की मांग (3) होती है, जिससे शारीरिक सम्भोग बहुत बढ़ जाता है। कहते हैं कि रोम में व्यक्तिगत कामोनुमाद का कार्य राजा की तरह शासन करता था।

आयत 24 के पीछे मूर्तियां बनाने पर एक आयत है (आयत 23) और उसके आगे मूर्तियों की पूजा करने की आयत है (आयत 25)। यह संयोग नहीं है कि शारीरिक नैतिक और यह आयत उस पूजा पर दोनों आयतों के बीच में है। अन्यजातियों के मंदिर पुरुष और स्त्री के मंदिर के वेश्याएं होने के लिए बदनाम थे, जो पैसे लेकर किसी भी तरह से विकृत शारीरिक सम्बन्ध बना सकते थे। मूर्तियों की पूजा करने वालों में कामुकता इतनी बेकाबू थी कि उनके मंदिर की उनकी पूजा में ही नहीं बल्कि प्रतिदिन के जीवन में भी पाई जाती थी।

वचन से निंदा

अन्यजातियों की ये बातें परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हैं। निर्गमन 20 में जब परमेश्वर ने दस आज्ञाएं दीं, तो सातवीं आज्ञा थी कि ''तू व्यभिचार न करना'' (आयत 14; देखें रोमियों 13:9)। अगले अध्यायों में इसी मूल आज्ञा में सामान्य रूप में शारीरिक पापों को सम्मिलित करने के लिए विस्तार दिया गया (देखें लैव्यव्यवस्था 18:6-23)। पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा स्वीकृत विवाह के बाहर शारीरिक सम्बन्धों को[13] हतोत्साहित और दण्डित किया गया था (देखें व्यवस्थाविवरण 22:22)।

बहुत से अनुवादों में ''सैक्स'' कहीं नहीं मिलता, पर बाइबल इस विषय पर कुछ कहती है उदाहरण के लिए देखें (देखें नीतिवचन 5:1-6; 7:6-27; श्रेष्ठगीत)। अधिकतर सैक्स के कार्य के लिए कोमल शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है (जैसा हम भी करते हैं)। अधिक सामान्य शब्दों में से एक शब्द ''जानना'' है, जैसे ''आदम ने अपनी पत्नी हव्वा को जाना[14] और वह गर्भवती हुई'' (उत्पत्ति 4:1क; KJV; देखें लूका 1:34; मत्ती 1:25; KJV)। अन्य अभिव्यक्तियों में ''मिलना'' और ''एक तन होना'' है (उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:5; इफिसियों 5:31)।

नये नियम में वचन के अनुसार हुए विवाह में पति और पत्नी के बीच शारीरिक सम्बन्ध परमेश्वर के द्वारा स्वीकृत है और इसे प्रोत्साहित किया या गया है (इब्रानियों 13:4; 1 कुरिन्थियों 7:2-5)। उस सम्बन्ध के बाहर विवाह तथा घर के ईश्वरीय प्रबन्ध के बिगाड़ के रूप में इसकी निंदा की गई है। दो अविवाहित लोगों के बीच में शारीरिक सम्बन्ध को आमतौर पर अंग्रेज़ी में ''fornication'' का नाम दिया जाता है। जब किसी विवाहित व्यक्ति के विपरीत लिंग वाले व्यक्ति के साथ सम्बन्ध हों, जो उसका पति या पत्नी न हो, तो उसे ''व्यभिचार'' कहा जाता है[15] (देखें रोमियों 7:3)। इन तथा और शारीरिक पापों की परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखकों ने घोर निंदा की है (लूका 16:18; प्रेरितों 15:20; गलातियों 5:19-21; 1 थिस्सलुनीकियों 4:2-5)।

गम्भीर चिंता

पौलुस के समय में समाज के परमेश्वर से दूर हो जाने का एक चिह्न शारीरिक कामुकता को बढ़ावा देना और शारीरिक सम्भोग की स्वीकृति थी। यह उस संसार के बारे में, जिसमें हम रहते हैं क्या कहता है ?[16] पुस्तकें, फिल्में, टेलीविज़न और यहां तक कि किसी भी कामुक सामग्री से हम पर प्रहार करते हैं। विवाह के बाहर शारीरिक सम्बन्ध को सामान्य, प्राकृति, अपेक्षित और बहुत चाहा जाने वाला बताया जाता है। विवाह से पहले शारीरिक सम्बन्ध न बनाने वाले युवाओं के साथ पहली बार ऐसे व्यवहार किया जाता है, जैसे वे असामान्य हों। सांसारिक सोच वालों के लिए शादी के बिना ''इकट्ठे रहना'' (लिव इन रिलेशनशिप) सम्बन्ध बनाने की क्रिया का एक और कदम बन गया है, जो विवाह के ''गम्भीर समर्पण'' में बदल भी सकता है और नहीं भी। पौलुस का एक वाक्यांश लें तो ऐसे लोग ''निर्बुद्धि पशुओं के ही तुल्य'' रहते हैं (2 पतरस 2:12; यहूदा 10)। मेरी दादी ऐसी जीवन शैली के वर्णन के लिए और खूबसूरत ढंग अपनाती थी, वह कहती, ''उन्हें जंगली बिल्ली की नैतिकताएं मिलती हैं।''

मुझे दोषियों से विरोध की आपत्ति सुनाई देती है: ''आप हमारे बारे में इतनी कठोर बातें क्यों कह रहे हैं ? हम किसी को दुख नहीं पहुंचाते !'' हां आप पहुंचाते हैं। आप अपने परिवार को और

जो आपकी चिंता करते हैं, उन्हें दुख पहुंचाते हैं। इसके अलावा आप उस संसार को दुख पहुंचाते हैं, जिसमें आप रहते हैं। ईश्वरीय मानक न हों तो समाज का ढांचा तहस-नहस हो जाता है। विवाह पूर्व सैक्स विवाह को और परिवार को कमजोर करता है, जो समाज की बुनियाद है।

इसके अलावा आपको अहसास हो या न, आप अपने आपको देख रहे हैं। जब परमेश्वर ने लोगों को ''उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए छोड़ दिया'' तो उसका एक भयंकर परिणाम ''उनके शरीरों का आपस में अनादर''[17] (रोमियों 1:24) था। बाद में रोमियों में पौलुस ने अपने पाठकों को ''अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान'' (12:1) करके चढ़ाने की चुनौती दी। एक और जगह पौलुस ने ध्यान दिलाया कि शरीर ''पवित्र आत्मा का मन्दिर'' होना चाहिए और हमें ''अपनी देह [ों] के द्वारा परमेश्वर की महिमा'' करनी चाहिए (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। जब कोई विवाह से पूर्व या विवाह के बाहर शारीरिक सम्बन्ध बनाता है तो अपनी देह को आत्मा के मन्दिर के रूप में, प्रेम को समर्पित होने के रूप में पेश करने के बजाय वह इसे वासना को समर्पित, शैतान का मन्दिर बना देता है। पौलुस ने लिखा कि ''देह व्यभिचार के लिए नहीं, वरन प्रभु के लिए है ...''; ''व्यभिचार से बचे रहो। जितने अन्य पाप मनुष्य करता है वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करने वाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है'' (1 कुरिन्थियों 6:13, 18)।

भयानक विनाश (1:26, 27)

समलैंगिक उलझन

पौलुस ने मूर्तिपूजा पर एक और पंक्ति लिखी (1:25) और फिर समाज द्वारा पापपूर्ण शारीरिक सम्बन्धों की गहराइयों तक जाने का एक विशेष उदाहरण दिया। उसने कहा:

> इसलिए [उनकी मूर्तिपूजा के कारण] परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया (आयतें 26, 27)।

अधिकतर पाठकों को यहां बताए गए पाप को पहचानने में कोई दिक्कत नहीं है। बाइबल में समलैंगिकता का सबसे स्पष्ट और ज़बर्दस्त उपचार एक यह भी है (सम्बन्धित वचनों के लिए, देखें 1 कुरिन्थियों 6:9, 10; 1 तीमुथियुस 1:8-10; उत्पत्ति 19:1-28; लैव्यव्यवस्था 18:22; 20:13; व्यवस्थाविवरण 23:17, 18)। ''समलैंगिकता'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''homosexualilty'' में होमो यूनानी भाषा के शब्द *homos* से लिया गया है जिसका अर्थ ''जैसा'' या ''वैसा ही'' है। इस प्रकार ''समलैंगिकता'' एक ही तरह के लिंग वाले (दो नरों या दो मादाओं) के बीच शारीरिक सम्बन्ध है। यह ''heterosexuality'' शब्द से अलग है जिससे एक नर और एक मादा (*hetero*) (''दूसरा'' के लिए) यूनानी शब्द के बीच यूनानी सम्बन्ध को दर्शाता है। नर समलैंगिकों को ''गे'' कहलाना अच्छा लगता है जबकि मादा समलैंगिक आम तौर

पर ''लेस्बियन'' कहलाती हैं। बाद वाला शब्द लेस्बोस के एजियन टापू से लिया गया है, जहां छठी शताब्दी ई.पू. में मादा समलैंगिकता प्रचलित थी।

कई लोग इस बात से इनकार करते हैं कि रोमियों 1:26, 27 में पौलुस समलैंगिकता की बात कर रहा था। परन्तु यह देखना कठिन है कि वह इतना स्पष्ट कैसे देख पाया: ''... स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। ... पुरुष ... आपस में कामातुर होकर जलने लगे, और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम'' किए। CEV में ''स्त्रियां स्वाभाविक शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनाना चाहती थीं। ...'' पुरुष भी ऐसा ही करते थे। उन्होंने स्त्रियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने की इच्छा छोड़ दी और दूसरे पुरुषों के साथ सैक्स की कामना रखते थे।

स्वर्गीय दण्ड

न केवल यह स्पष्ट है कि रोमियों 1:26, 27 समलैंगिकता की बात कर रहा है बल्कि यह भी स्पष्ट है कि यह परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध है। पहले पौलुस ने कहा कि समलैंगिकता ''नीच वासनाओं'' (आयत 26) का परिणाम है। ''वासनाओं'' के लिए शब्द (*pathos*) के एक रूप का इस्तेमाल नये नियम में बुरे अर्थ में ही हुआ है।[18] अनुवादित शब्द ''नीच'' (*atimia* से) का अर्थ ''अपमान योग्य'' या ''लज्जित'' है।[19] फिलिप के अनुवाद में ''disgraceful passions'' है।

फिर पौलुस ने समलैंगिकता को ''अस्वाभाविक'' कहा (आयत 26)। यह किसी ''तंग सोच वाले प्रचारक'' का निर्णय नहीं बल्कि प्रभु के एक प्रेरित की परमेश्वर की प्रेरणा से दी घोषणा थी। ''स्वभाव के विरुद्ध'' दो यूनानी शब्दों अर्थात ''स्वभाव'' (*phusis*) और ''विरुद्ध'' (*para*) के अर्थ वाले उपसर्ग का अनुवाद है। इस वाक्यांश का मूल अर्थ है ''प्रकृति के विरुद्ध'' (देखें KJV)। AB में ''अप्राकृतिक और असामान्य'' है। मनुष्य के शारीरिक ढांचे से परिचित किसी भी व्यक्ति के लिए यह स्पष्ट होना चाहिए कि पुरुषों के लिए पुरुषों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाना ''अप्राकृतिक'' है। पहले मैंने सुझाव दिया था कि सामान्य अर्थ में पाप ने मनुष्यजाति को पशुओं के स्तर पर ला दिया था। समलैंगिकता ने मनुष्यजाति को पशुओं से भी नीचे कर दिया। मैं खेती करने वाले समाजों में पला बढ़ा हूं और मैंने कभी किसी बैल को दूसरे बैल के प्रति या किसी मुर्गे को किसी दूसरे मुर्गे के साथ मिलन करते नहीं देखा।

पौलुस ने कहा कि लेस्बियनों ने स्वाभाविक कार्य को उसके लिए जो अस्वाभाविक है, में ''बदल डाला'' (आयत 26)। ''बदल डाला'' के लिए यूनानी शब्द आयत 23 में मिलने वाले शब्द की तरह ही है, जिसमें कहा गया है कि मनुष्यजाति ने ''अविनाशी परमेश्वर की महिमा को मूर्त की समानता में बदल डाला।'' मनुष्यों ने मूर्तियों के लिए परमेश्वर को छोड़कर बहुत बुरा काम किया था और स्त्रियों ने अन्य स्त्रियों के साथ अस्वाभाविक सम्बन्धों को बनाने के लिए स्वाभाविक सम्बन्ध को बदलकर भयंकर काम किया था।

पुरुष समलैंगिकों के बारे में पौलुस ने कहा, ''पुरुषों ने स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़ दिया''[20] (आयत 27)। अनुवादित शब्द ''छोड़ दिया'' (*aphiemi* का एक रूप) एक मजबूत शब्द है[21] जो ''भेजना'' (*hiemi*) के अर्थ वाले शब्द के साथ ''से'' (*apo*) के लिए

उपसर्ग को मिलाता है।[22] इसका अर्थ ''भेज देना, खारिज करना'' है। पुरुष समलैंगिकों ने स्त्रियों के साथ स्वभाविक सम्बन्धों को जान-बूझकर नकारा।

उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्योंकि वे ''आपस में कामातुर होकर जलने लगे'' (आयत 27)। ''जलने लगे'' *ekkaio* से लिया गया है, जो उपसर्ग *ek* के साथ जलना (*kaio*) के शब्द को गहरा देता है। अनुवादित शब्द ''कामातुर'' (*orexis*) का अनुवाद ''वासना'' ही हो सकता है (देखें KJV)। AB में ''पुरुष ... वासना से जलते थे'' (जल रहे, भस्म हो रहे थे)। वासना को नियन्त्रित करने के बजाय, समलैंगिकों ने इसे नियन्त्रण से बाहर होने दिया।

फिर पौलुस ने समलैंगिकों पर ''निर्लज्ज काम'' करने का आरोप लगाया (आयत 27)। ''निर्लज्ज'' के लिए शब्द (*aschemosune*) ''मानवीय व्यवहार में शालीनता के अर्थ वाले शब्द का नकारात्मक रूप है।''[23] पौलुस ने उस रूपक का इस्तेमाल किया जिसका अनुवाद NASB वाली मेरी बाइबल की एक टिप्पणी में ''लज्जित कार्य'' है। समलैंगिकों को गर्व करने के बजाय लज्जित होना चाहिए।

अन्त में, आयत के अन्त में पौलुस ने समलैंगिकता की बात करने के लिए ''भ्रम'' शब्द का इस्तेमाल किया, अनुवादित शब्द *plane* का अर्थ है ''सही मार्ग का त्याग करना, चाहे शिक्षा में हो या नैतिकताओं में''[24] समलैंगिक लोग सही मार्ग पर नहीं, बल्कि गलत मार्ग पर थे। पौलुस की विनाशकारी निंदा के बावजूद ऐसे लोग हैं, जो फिर भी अपनी समलैंगिकता को सही ठहराने का प्रयास करते हैं। कइयों ने रोमियों 1:26, 27 के ''स्वाभाविक'' और ''स्वभाव'' के विरुद्ध शब्दों को पकड़ लिया है। वे ज़ोर देते हैं कि पौलुस उन लोगों को जिनके लिए समलैंगिकता ''स्वाभाविक है'' दोषी नहीं ठहराना चाहता था, बल्कि उसने केवल उनकी या जिनकी समलैंगिकता ''स्वभाव के विरुद्ध'' है, बात की। अन्य शब्दों में (वे कहते हैं) कि पौलुस विश्वलैंगियों को डांट रहा था, जो समलैंगिकता में लगे हुए थे। डग्लस जे. मू ने लिखा है:

> इस विचार के साथ समस्या पौलुस के ''स्वभाव'' की भाषा की सही पृष्ठभूमि के विपरीत समझने में असफलता है। पौलुस अन्य यहूदी लेखकों की तरह *परमेश्वर द्वारा ठहराए गए* लोगों के प्राकृतिक सम्बन्ध की बात करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल कर रहा है। उदाहरण के लिए इतिहासकार जोसेफस लिखता है कि ''[मूसा की] व्यवस्था पत्नी के साथ स्वाभाविक सम्भोग के अलावा किसी और शारीरिक सम्बन्ध को नहीं जानती'' (*अगेंस्ट एपियोन* 2.24)। इस आयत में ''स्वभाव'' का अर्थ व्यक्ति का मानवीय स्वभाव या स्थिति नहीं, बल्कि इस संसार की बात है जिसे परमेश्वर ने बदला। समलैंगिक कार्यों का अर्थ मानवीय जीवों के नर और मादा बनाने की उसकी सृजक मंशा का उल्लंघन करना है।[25]

मू ने लिखा है कि ''पौलुस'' मानवीय जीवों की ईश्वरीय सृष्टि को इन दो श्रेणियों को विभाजित करने की ईश्वरीय सृष्टि को रूपांतरण करने और उस अन्तर के होने वाले उचित शारीरिक व्यवहार के प्रभावों को रेखांकित करने के लिए 'मादा' (*thelys*) और (*arsen*) 'नर' के लिए यूनानी शब्दों का इस्तेमाल करता है।''[26]

जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने भी ''स्वभाव'' और ''स्वाभाविक'' शब्दों पर टिप्पणी की है:

> ... हमें संज्ञा, ''स्वभाव'' की व्याख्या ''मेरा स्वभाव'' या ''जो मुझे स्वाभाविक प्रतीत होता है'' के अर्थ वाले विशेषण ''स्वाभाविक'' की व्याख्या करने की छूट नहीं है। इसके विपरीत, *physis* ([या *phusis*] ''प्राकृतिक'') का अर्थ परमेश्वर की बनाई हुई व्यवस्था है। ''प्रकृति के विरुद्ध काम करने का अर्थ उस प्रबन्ध का उल्लंघन करना है, जो परमेश्वर ने स्थापित किया है,'' जबकि ''प्रकृति के अनुसार काम करना सृष्टिकर्त्ता की इच्छा से मेल खाता'' व्यवहार करना है। ... यह क्या था [,] उत्पत्ति की पुस्तक हमें बताती है और यीशु उसकी पुष्टि करता है: आरम्भ में सृष्टिकर्त्ता ने ''उन्हें नर और नारी बनाया'' और कहा, ''इस कारण पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।'' तो यह अब दो नहीं, बल्कि एक हैं। ... परमेश्वर ने इस कार्य में यह स्थापित किया कि ''एक तन'' होने के अनुभव का एकमात्र संदर्भ जो वह चाहता है वह अलग-अलग लिंग वाले दो व्यक्तियों का सम्बन्ध है और समलैंगिक सम्बन्ध (चाहे यह कितना भी प्रेमी और समर्पित होने का दावा क्यों न करे), ''प्रकृति के विरुद्ध'' है और इसे कभी भी विवाह का उचित विकल्प नहीं माना जा सकता।[27]

यह तथ्य है कि पौलुस ने समलैंगिक कार्यों की निंदा *की* है। चाहे वे ''समलिंगियों'' द्वारा हों या ''विषमलिंगियों'' द्वारा। पौलुस ने इतनी सख्ती और इतनी स्पष्टता से क्यों कहा, क्योंकि समलैंगिकता और अन्य सैक्सुअल विकृतियां उसके समय के अन्यजाति समाज में आम पाए जाते थे। पहले पन्द्रह रोमी सम्राटों में से चौदह घोषित समलिंगिक थे।[28] कई यूनानी दार्शनिक सैक्सुअल पथभ्रष्ट थे।

पौलुस की बातें, आज भी उतनी ही उपयुक्त हैं, जितनी उनके लिखे जाने के समय थीं। अधिक देर नहीं हुई है जब कई समाजों में समलैंगिकता (जिसे ''sodomy'' कहा जाता है)। प्रकृति, मनुष्य प्रजाति और सभ्यता के विरुद्ध अपराध माना जाता था। परन्तु आज ही के वर्षों में हम पर समलैंगिकता के समर्थन में प्रचार ने हमला किया। समलिंगियों के साथ पहले सहनशीलता, फिर तरस करने के लिए कहा जाता था और अब उनकी कथित ''वैकल्पिक जीवन शैली'' को पूरी तरह से स्वीकार करने और उसका समर्थन करने की बात से हम संतुष्ट नहीं होंगे। वे लोगों की बहुसंख्या का एक छोटा सा प्रतिशत हैं पर फिल्मों और टेलीविज़न के कार्यक्रमों से इसका कभी पता नहीं चल पाएगा, जिसमें अधिकतर प्रतिशत ''गे'' पात्रों और ''गे'' कथानकों का है।

समलैंगिकों का समर्थन पाने को उत्सुक राजनेता उनकी लहर का समर्थन करते हैं। उदारवादी डिनोमिनेशनों ने खुले आम ''समलैंगिक'' धार्मिक अगुओं को ''अडैन'' कर दिया था। यदि कोई परमेश्वर के वचन की शिक्षा की चुनौती का विरोध करता है, तो उसे कठोर, पूर्वाग्रह से बना और तंग सोच वाला माना जाता है। समलिंगियों के ''अधिकार'' पर सवाल उठाने वाले व्यक्ति को नाम भी दिया गया है, उसे ''homophobic'' कहा गया। यह शब्द एक बार उनके लिए इस्तेमाल किया गया था जो समलिंगियों से भय खाते थे। अब इसे उनके लिए इस्तेमाल किया जाता है जो समलैंगिक जीवन शैली की निंदा करते थे।[30] हो सकता है कि समलैंगिकता के विरुद्ध बात करना

प्रसिद्ध न हो या ''राजनैतिक रूप में उचित'' न हो, पर बाइबल आज भी वही कहती है जो हमेशा कहती आई है। समलैंगिकता गलत है। समलैंगिक कार्य पाप है।

हानिकारक परिणाम

पौलुस समलैंगिकता को अपनी वासनाओं की संतुष्टि के लिए परमेश्वर द्वारा ''लोगों को छोड़ देने'' के परिणामों के सम्पूर्ण उदाहरण के रूप में देखता है। ''पुरुषों के पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम'' करने की बात कहने के बाद पौलुस ने आगे कहा, ''अपने भ्रम का ठीक फल पाया'' (रोमियों 1:27)।

जब पौलुस ने, अपने भ्रम का ''ठीक फल'' कहा तो क्या हमारे ध्यान में आम लोगों की अपेक्षा समलैंगिकता में पाए जाने वाले यौन रोगों की बात आई? आयत 27 का अन्तिम भाग पढ़ने पर AIDS की महा मारी पर विचार करना कठिन नहीं है, जो समलैंगिकों को तो जरूरी नहीं है पर उस समुदाय पर इसके विनाशकारी प्रभाव हैं। कई लेखकों का मानना है कि पौलुस समलैंगिक लोगों के व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव की बात कर रहा था (देखें फिलिप्पस)। चार्ल्स स्विन्डल ने निष्कर्ष निकाला कि प्रेरित के शब्द ''जीवन में किसी की विलक्षण, पहचान की दुखद समयों ... अनिश्चितता'' का संकेत करते हैं।[31] आप कौन ''हैं'' को समझने का आवश्यक भाग यह कहने के योग्य होना है कि ''मैं पुरुष हूं'' या ''मैं स्त्री हूं।'' जब लोग परमेश्वर के सम्बन्ध से दूर चले जाते हैं, तो श्रेष्ठता कम हो जाती और उस पर दाग लग जाता है। इसलिए डरे हुए लोगों की यह शिकायत मिलती है, ''मुझे नहीं मालूम की मैं कौन हूं!'' एफ. लेगर्ड स्मिथ ने जोड़ा है कि समलैंगिकता में भी ''आमतौर पर भय, अकेलापन, ठुकराया जाना, और दोष साफ़ रहता है।''[32]

पौलुस के मन में समलैंगिकों द्वारा कहा जाने वाला कोई भी और हर ''दण्ड'' था जिसमें यह ज्ञान भी है कि उनकी जीवन शैली प्रभु को प्रसन्न नहीं कर रही है। AB में आयत 27 को इस प्रकार विस्तार दिया गया है: समलैंगिक कार्यों में लगे लोग ''अपने ही शरीरों और व्यक्तित्व में अपने गलत कामों के प्रत्यष्ट दण्ड भुगत रहे हैं।'' किसी ने कहा है कि कहीं-कहीं पाप के परिणामों की [हमेशा] भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, पर उसके परिणाम अवश्य मिलते हैं।[33]

पौलुस अपने पाठकों को समझाना चाहता था कि समलैंगिकों में *जो भी* कहा गया, वह ''उचित दण्ड'' था। यह वही था, जो उन्होंने कमाया था (देखें 6:23), यानी उनकी विकृति की ''उचित मज़दूरी'' (1:27; NEB), ''वह दण्ड'' जिसके वे योग्य थे (TEV)।

वास्तविक चिंता

क्या इसका अर्थ यह है कि समलैंगिक लोगों द्वारा कष्ट सहे जाते देखकर मुझे और आपको आनन्दित होना चाहिए? जब अब्राहम को बताया गया था कि सदोम में समलैंगिक को नष्ट किया जाना था तो उसने आनन्द नहीं किया था बल्कि प्रार्थना की थी (उत्पत्ति 1:18)। समलैंगिक कार्य करने वालों के लिए हमें भी वैसी ही स्नेहपूर्ण चिन्ता करनी चाहिए, जैसी सब पापियों के लिए करते हैं। तीमुथियुस को पौलुस के निर्दोष यहां विशेष रूप से अनुकूल लगते हैं:

> प्रभु के दास को ... चाहिए कि सब के साथ मोल और शिक्षा में निपुण और सहनशील

> हो। ... क्या जाने की परमेश्वर उन्हें भी मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहचाने, और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएं (2 तीमुथियुस 2:24-26)।

फिर जब वे मन फिराते हैं, तो हमें उन्हें आनन्द से ग्रहण करने के लिए तैयार होना आवश्यक है।

इस चर्चा को समाप्त करने से पहले मुझे किसी भी समलैंगिक को जो इस समय समलैंगिकता में लगा हुआ है और यह पाठ पढ़ रहा हो, कुछ बातें कहनी हैं। आप में से कइयों को पता हो (शायद पीड़ादायक ढंग से पता हो) कि बाइबल क्या सिखाती है, पर आपको लग सकता है कि आपके सामने कोई विकल्प नहीं है। शायद आपको बताया गया हो कि ''परमेश्वर ने आपको समलैंगिक बनाया है'' और इसीलिए आप ऐसे हैं और ऐसे ही रहेंगे। मैं कोई डॉक्टर या मनोवैज्ञानिक नहीं हूं, इसलिए मैं यह नहीं बता सकता कि समलैंगिकता ''जीन में'' कितनी है और दूसरों में कितनी देखी जा सकती है। परन्तु मैं इतना जानता हूं कि परमेश्वर की सहायता से लोगों ने अपने समलैंगिक व्यवहार को त्याग दिया है।

पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को बताया कि ''समलैंगिक'' और अन्य अधार्मिक लोग ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश'' नहीं कर पाएंगे (1 कुरिन्थियों 6:9, 10)। फिर उसने कहा, ''*और तुम में से कितने ऐसे ही थे* परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए और पवित्र और धर्मी ठहरे'' (आयत 11)।

शायद आपके मन में समलैंगिकता के प्रति झुकाव है। मैं ऐसे कुछ लोगों को जानता हूं जो शारीरिक सम्भोग के प्रति झुकाव रखते हैं। मैं इस व्यक्ति को जानता हूं जो यह मानते हुए कि मैं उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि अथवा व्यक्तित्व के बारे में जानता हूं, सम्भवतया शराबीपन के लिए झुकाव रखता है। अधिकतर लोगों का *किसी पाप* के प्रति झुकाव होता है। वरना शैतान हमें परीक्षा में नहीं डाल सकता। ऐसी पीड़ित प्रवृत्तियां समलैंगिकता, यौन सम्बन्ध या शराब पीना या किसी और पाप को सही नहीं बना देती। यह तो केवल हमें अपनी कमजोरियों के प्रति सचेत होने और सामर्थ के लिए प्रभु पर निर्भर रहना सीखने की हमारी आवश्यकता को रेखांकित करती है (देखें 1 कुरिन्थियों 10:13)।

समलैंगिकता पर काबू पाने का पहला कदम इसे पाप के रूप में देखना है।[34] एक अज्ञात परामर्श वार्ता में लिखा है ''समलैंगिकता को रोग कहने से ग्राहक की आशा बढ़ नहीं जाती, पर इसे पाप कहने से, जैसा कि बाइबल कहती है आशा मिलती है।''[35] सम्भवतया समलैंगिक पापियों की सहायता करने के सामने उन्हें आशा दिलाने से बड़ा कोई काम नहीं होगा। समलैंगिक व्यक्ति को आशा क्यों मिल सकती है? क्योंकि उसे यह पता चल सकता है कि यदि वह अपने पाप से मन फिराने को तैयार है तो परमेश्वर इसे ग्रहण कर लेगा। इसके अलावा उसे परमेश्वर का आश्वासन है कि वह इसकी निर्बलता पर काबू पाने के उसके संघर्ष में उसके साथ होगा। प्रभु उनकी भी सहायता कर सकता है, जिनकी परीक्षा होती है (इब्रानियों 2:18)।

क्या समलैंगिकता पर काबू पाना आसान होगा? नहीं। यदि आप समलैंगिक व्यवहार में डूबे हुए हैं तो आपको किसी भरोसेमंद, पेशेवर, प्रोत्साहित करने वाले मसीही सलाहकार से सहायता लेने का विचार करना चाहिए।[36] आप जो कुछ भी करें, उसे इस सच्चाई से जोड़ लें कि ''परमेश्वर

के लिए सब कुछ सम्भव है'' (मत्ती 19:26)। पौलुस के शब्दों को अपना आदर्श बना लें: ''जो मुझे सामर्थ देता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)!

सारांश

रोमियों 1:18-32 तीरतियुस से लिखवाते हुए पौलुस की आंखें चमक रही थीं या वे आंसुओं से भरी हुई थीं, वह ऐसे संसार का वर्णन कर रहा था, जो पागल हो गया था क्योंकि उसने अपने बेकार अनुमानों और स्वार्थी इच्छाओं को परमेश्वर का स्थान दे दिया था। लैस्ली सी. ऐलन ने पौलुस के विचारों को इस प्रकार संक्षिप्त किया: ''हर जगह गड़बड़ है। जानवर देवता बन गए हैं, पुरुष स्त्री बन गया है, गलत सही बन गया है। सच्चे परमेश्वर के बिना प्रकृति अप्राकृतिक बन गई है। सृष्टिकर्त्ता को ठुकरा दिया गया है और सृष्टि गड़बड़ा गई है ...।''[37]

18 से 32 आयतों का अपना अध्ययन हम अलगे पाठ में पूरा करेंगे। समाप्त करने से पहले मैं एक चेतावनी देना आवश्यक समझता हूं। यदि आप कामुक नैतिकता के दोषी नहीं हैं या यदि आप समलैंगिक प्रवृत्ति में नहीं पड़े हैं, तो आपको लग सकता है कि यह पाठ आपके किसी काम का नहीं है। आप शारीरिक पाप को गलत ठहराते हुए पौलुस के साथ सहमति में सिर हिला रहे होंगे। अपने आप में धर्मी होने से अध्याय 2 में पौलुस ने कहा, ''अत: हे दोष लगाने वाले, तू कोई क्यों न हो, तू निरुत्तर है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है उसी बात में अपने आपको भी दोषी ठहराता है, इसलिए कि तू ... स्वयं भी वह काम करता है'' (आयत 1)। हो सकता है कि आप आपत्ति करें कि ''पर मैंने कभी व्यभिचार नहीं किया और न ही मैं समलैंगिक हूं।'' हो सकता है कि न किया हो, पर क्या कभी आपने किसी को वासना भरी नज़र से देखा है (मत्ती 5:28); हो सकता है कि आप समलैंगिकता के पाप के दोषी न हों, पर क्या आपने कभी कोई पाप किया? याद रखें कि पाप पाप ही है। हम सब पापी हैं जिस कारण हम सब मृत्यु के योग्य हैं (रोमियों 3:23; 3:23)।

1:18-32 में पौलुस का उद्देश्य अन्य जाति संसार को पाप के विषय में निरुत्तर करना और इस तरह उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह और करुणा की आवश्यकता समझाना था। यदि आप पापी हैं, और मेरा मानना है कि आप हैं, तो आपको परमेश्वर के अनुग्रह की उतनी ही आवश्यकता है जितनी यहां वचन में बताए गए हर व्यक्ति को! पाठ में मैंने ''दुखद ठुकराया जाना, परेशान करने वाला परिणाम और भयानक चिंता'' की बात की। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह कहानी का अंत नहीं है। रोमियों की पुस्तक ने आगे हमें रोमांचकारी ''उपचार'' बताया अर्थात यीशु के लहू के बारे में बताया! आपका पाप *जो भी हो* यदि आपने लहू को शुद्ध नहीं किया है, तो मैं आपको प्रेमपूर्वक और आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा आज ही प्रभु के पास जाने का आग्रह करता हूं (प्रेरितों 2:36-38)!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रस्तुति में मैंने उपयुक्तता की सीमाओं को लांघे बिना स्पष्ट और संक्षिप्त होने का प्रयास किया। जहां आप पढ़ाते या प्रचार करते हैं वहां सार्वजनिक तौर पर कुछ कहने के लिए उपयुक्त या

अनुपयुक्त होने की बात आप ही जानते हैं। बोलते समय ध्यान रखें कि आपको सुनने वालों को ठोकर न लगे।

इस पाठ में मैंने बताया है कि पाप व्यक्ति को पशुओं के नीचे ले जा सकता है। इसे समझाने के लिए एक सरल रेखाचित्र इस प्रकार है।

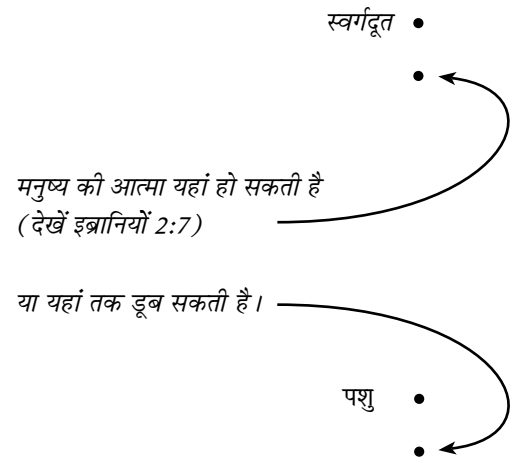

आप चाहें तो 1:24-28क और 1:28-32 पर पाठों का एक पाठ बना सकते हैं। उन आयतों की रूपरेखा बनाने का एक ढंग यह है: (1) त्रासद वास्तविकता: बेलगाम जीवन (1:24, 26, 28)। त्रासद परिणाम: अप्राकृतिक वासना (1:24-28); त्रासद रिकॉर्ड: अश्लील सूची (1:28-32)।

टिप्पणियां

[1]यदि आपके पास ''अच्छी-खबर और बुरी-खबर'' की कोई उपयुक्त कहानी हो तो आप पाठ का आरम्भ उससे कर सकते हैं। [2]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988, 73); एण्ड चार्ल्स आर. स्विन्डल, *कमिंग टू टर्मस विद सिन: ए स्टडी ऑफ रोमन्स 1-5* (अनहीम, कैलिफोर्निया: इन्साइट फ़ॉर लिविंग, 1999), 16 साहित विभिन्न स्रोतों से लिया गया। [3]ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* सम्पा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिच, अनुवाद ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 166 में एफ. बुशल, *didomi* ''दिदोमी।'' [4]*दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 302. [5]उदाहरण के लिए, कई लेखक इस तथ्य पर ज़ोर देते हैं कि परमेश्वर ''उन्हें छोड़ देने'' में निष्क्रिय नहीं, बल्कि सक्रिय था। [6]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 48. [7]जे. डी. थॉमस, क्लास नोट्स, *रोमन्ज़,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955)। [8]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसेट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 33. [9]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमैन, एण्ड नेल विल्सन,

रोमन्स, लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 31. [10]सी. एस. लुइस, *दि प्रोब्लम ऑफ़ पेन* (ऑक्सफोर्ड: पृष्ठ नहीं, 1940; रिप्रिंट, न्यू यॉर्क: मैक्मिलन पब्लिशिंग कं., 1962), 127-28.

[11]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि, *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिर्स, 1985), 384. [12]ज्योफ्री डब्ल्यू ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* एडिशन. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिच, अनुवाद ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 381-82 मैं फ्रेडरिच हॉक ''*katharos*'' में विभिन्न उपयोग बताए गए हैं। [13]ध्यान दें कि मैं ''परमेश्वर द्वारा स्वीकृत विवाह'' और ''वचन के अनुसार विवाह'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर रहा हूं। कई विवाह परमेश्वर द्वारा स्वीकृत *नहीं* हैं (देखें मरकुस 10:11)। [14]NASB में ''के साथ सम्बन्ध थे'' है, पर ''जाना'' मूल अर्थ से मेल खाता है। [15]व्यभिचार के लिए अंग्रेजी शब्दों ''fornication'' और ''adultery'' के लिए (हिन्दी की तरह-अनुवादक) कई बार हर शारीरिक पाप के लिए व्यापक शब्दों के रूप में किया जाता है। एक ही संदर्भ में इस्तेमाल किए जाने पर ''fornication'' आमतौर पर अविवाहित लोगों के बीच में शारीरिक सम्बन्धों के लिए जबकि ''adultery'' में कम से कम एक विवाहित व्यक्ति शामिल होता है। [16]उदाहरण दें कि यह किस प्रकार आपके समाज में लागू होता है। [17]''देह का अपमान करना'' का विचार सम्भवतया समलैंगिकता, जिसकी चर्चा पौलुस ने पहले की, की प्रासंगिकता है। फिर भी कुछ सामान्य टिप्पणियां हैं कि वचन के बाहर शारीरिक सम्बन्ध किस प्रकार देह का अपमान है। [18]वाइन, 16. [19]वही, 660, 567. [20]यूनानी धर्मशास्त्र में यहां एकवचन रूप का इस्तेमाल किया गया है, जिसका अर्थ ''स्त्री'' है, पर यह स्पष्ट है कि ''स्त्री'' समूह के रूप में नारियों की बात है। इसलिए अधिकतर अनुवादों में बहुवचन ''स्त्रियां'' है।

[21]मौरिस, 92. [22]*दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिकन,* 62. [23]ज्योफ्री डब्ल्यू ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* एडिशन. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिच, अनुवाद ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 1129 में जे. शनेडर ''*schema.*'' [24]वाइन, 205. [25]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 66-67. [26]वही, 62. [27]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड्स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रेस, 1994), 78. [28]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1975), 25. [29]''मोरेलिटी एंड होमोसैक्सुएलिटी,'' *वॉल स्ट्रीट जरनल* (24 फरवरी 1994): ए18. [30]बॉबी डॉकरी, ''होमोसैक्सुएलिटी'' (ट्रैक्ट) (पृष्ठ नहीं: गॉस्पल ट्रैक्ट इंटरनैशनल, तिथि नहीं)।

[31]चार्ल्स स्विन्डल, ''सिनेरेमा इन पैनोरमा'' (भाग 2) (अनाहीम, कैलिफोर्निया: इनसाइट फ़ॉर लिविंग, 1976), कैसेट। [32]एफ. लेगर्ड स्मिथ, ''दि गे-इज़-गुड सेलस पिच इज़ ए रिप-ऑफ़,'' *गॉस्पल एडवोकेट* (2 मार्च 1978): 132. [33]बार्टन, वीरमैन, एंड विल्सन, 36. [34]स्विन्डल, *कमिंग टू टर्मस विद सिन,* 26. [35]वही, 6. [36]बर्टन, वीरमैन, एंड विल्सन, 36. [37]न्यू इंटरनैशनल बाइबल कमैंट्री, सम्पा. एफ. एफ. ब्रूस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 1319. लेसले सी. एलेन, ''रोमन्स।''

समलैंगिकता के पक्ष में ''केस?''

बहुत से लोग जो समलैंगिक जीवन में समर्पित हैं, वे समलैंगिकता पर बाइबल की बात को नज़रअन्दाज़ करते हैं; वे ऐसी शिक्षा को आप के लिए ''अप्रासंगिक'' मानते हैं। परन्तु उनमें से कुछ को उनकी जवानी में परमेश्वर और बाइबल का सम्मान करना सिखाया गया है। इसलिए समलैंगिकता के विषय में गूढ़ आयतों को समझना उनके लिए कठिन होता है। 1:26, 27 और इससे जुड़े वचनों को ''रफा-दफा'' करने के प्रयास किए गए हैं। ऐसा एक प्रयास ''परमेश्वर ने

उन्हें छोड़ दिया'' पाठ में बताया है। नीचे बाइबल के चित्रणों के साथ और तर्कों के साथ उदाहरण हैं।

तर्क 1: ''समलैंगिकता को आम तौर पर 'sodomy' कहा जाता है, परन्तु सदोम के लोगों का पाप समलैंगिकता नहीं था।'' उसके विपरीत वे असत्कारशीलता या शायद गैंग रेप के दोषी थे।

उत्तर: ''यहेजकेल के रूपकों में से एक में उसने सदोम के कई पापों का उल्लेख किया (16:49, 50), परन्तु वह पाप जिसके लिए सदोम बदनाम था पुरुषों के दूसरे पुरुषों के साथ शारीरिक सम्बन्धों का होना था (देखें उत्पत्ति 19:5)।''

तर्क 2: ''बाइबल के महत्वपूर्ण पात्र समलैंगिक थे। उदाहरण के लिए, 1 शमुएल 18:1 के अनुसार दाऊद और योनातन एक-दूसरे से प्रेम करते थे।''

उत्तर: यह तथ्य कि बाइबल के पात्रों ने पाप किए इस बात को सही नहीं बना देता, पर इसमें समलैंगिकता की कोई बात नहीं थी। दाऊद विषमलिंगी था, जिससे दुनिया भर की स्त्रियां बहुत आकर्षित होती थीं (2 शमूएल 11:2)। योनातन के लिए उसका प्रेम मित्र के लिए प्रेम था। मैं तुम से प्रेम करता हूं (यूहन्ना 13:34) कहना, मुझे समलैंगिक नहीं बना देता।

तर्क 3: ''यदि समलैंगिकता गलत थी, तो यीशु इसे गलत बताता, पर उसने नहीं बताया।''

उत्तर: ''शारीरिक पाप की यीशु की सामान्य स्थितियों में, समलैंगिकता शामिल है (देखें मत्ती 5:27, 32)। यीशु ने ज़ोर दिया कि *नर* और *नारी* के लिए परमेश्वर की योजना थी कि वे 'एक तन' (मत्ती 19:4) हों। इसके अलावा यीशु के प्रेरितों की शिक्षा वास्तव में यीशु की है (लूका 10:16; देखें रोमियों 1:26, 27)।''

तर्क 4: ''रोमियों 1:26, 27 में पौलुस का उद्देश्य समलैंगिकता को गलत ठहराना नहीं बल्कि परमेश्वर की धार्मिकता के लिए मनुष्यजाति की आवश्यकता को दिखाना है।''

उत्तर: ''परमेश्वर की धार्मिकता के लिए आवश्यकता को स्थापित करने के लिए पौलुस ने ध्यान दिलाया कि मनुष्य जाति कितनी पापी हो चुकी थी। पापपूर्ण होने का एक प्रमुख उदाहरण समलैंगिकता था।''

तर्क 5: ''रोमियों 1:26, 27 में पौलुस के मन में किसी दूसरे पर ज़बर्दस्ती सैक्स (जैसे किसी बच्चे के साथ जबर्दस्ती) की बात थी। वह 'दो सहमत व्यक्तियों' के बीच सैक्स को गलत नहीं ठहराता।''

उत्तर: ''पौलुस ने कहा कि पुरुष '*आप में* कामातुर होकर जलने लगे' (आयत 27)। यह *आपसी सहमति* से समलैंगिकता थी। आयत 27 स्त्रियों और पुरुषों के समलैंगिक पापों को मिलाते हुए 'वैसे ही' शब्दों के साथ आरम्भ होती थी। पौलुस ने रजामंदी से होने वाली समलैंगिकता को गलत ठहराया चाहे यह स्त्रियों द्वारा किया गया हो या पुरुष समलैंगिकों द्वारा।''

तर्क 6: ''रोमी सम्राटों और बड़े-बड़े दार्शनिकों सहित कई प्रसिद्ध लोग समलैंगिक थे।''

उत्तर: ''हां, और पौलुस ने उन सब को दोषी बताया। उनका असामान्य व्यवहार उनके नैतिक तन्त्र को नष्ट करने वाला था, जिससे उन राष्ट्रों का पतन हुआ।''